Safina Kausar
Assistant professor.
Department of Home Science.
A.C. Hafeez College Ara

B.A part III (U.G)
Paper. 7th VIIth
(प्रसार शिक्षा)

Topic : प्रसार शिक्षण विधियाँ।

*) शिक्षण की विधि → शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण विधि की उपयोगिता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। शिक्षा उद्देश्यों तक पहुँचने में विधियाँ उस मार्ग पर कार्य करती जिसके माध्यम से वहां तक पहुँचा जा सकता है। शिक्षण - ध्येयों में निश्चित होने के उपरान्त तुरन्त ही विधि के चलन का प्रश्न उठता है। पिछले दशकों में इस वि पर विवाद सा उठ खड़ा हुआ है कि विधियाँ अधिक महत्व है या विषय वस्तु का ज्ञान।

इस संबंध में प्रो० वाइलीज तथा वाई का कहना है कि :—

" शिक्षा शास्त्र को शिक्षण प्रक्रिया का निष्क्रिय पक्ष ना मानकर शिक्षा का सक्रिय पक्ष मानना चाहिये। आदर्शवादियों के अनुसार शिक्षण की प्रणाली ऐसी होनी चाहिये। जिससे बालक के आन्तरिक शक्तियों का पूर्ण विकास हो सके और वह परम मूल्यों का साक्षात्कार कर सके। आदर्शवादी व्यक्ति समाज के लक्ष्यों में समन्वय मानते हैं। बालक को उनके विकास के लिए उन्मुक्त परिवेश मिलना चाहिए। उसे निर्देश और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इसके शिक्षा का वर्तमान अनुभव संबंध है। इस प्रकार आदर्शवादी और व्यवहारवादी शिक्षा प्रणाली आपस में मिलते-जुलते हैं।

इस प्रकार कहा जाता है की शिक्षण विधि का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। पद्धति वह मार्ग है जो ज्ञान की प्राप्ति के लिए अपनाया जाता है इसी प्रकार शिक्षण में भी पद्धति का वही महत्व है जो किसी विशिष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए सत्य मार्ग का है। जिस प्रकार सत्य मार्ग के अभाव में कोई व्यक्ति विशिष्ट स्थान तक नहीं पहुँच सकता है। उसी प्रकार पद्धति के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए

कुछ विधियों का प्रयोग करना चाहिए। विधियों को परि-भाषा एक विद्वान ने इस प्रकार दी है। युक्तियों से हमारा तात्पर्य उन साधनों से है जो शिक्षा विविध रूप से कक्षा में शिक्षा देने में प्रयोग करते है। कुछ प्रमुख शिक्षण पद्ध-तियों निम्नलिखित है —

1) वर्णन पद्धति (Discription) ⟶ वर्णन पद्धति का अर्थ है किसी घटना या कहानी के यथा तथ्य वर्णन कर देना। वर्णन इस ढंग से किया जाता है कि तथ्य संबंधित वर्णन छात्रों के मन में चित्रित हो जाये, इस विधि का उपयोग इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा कही-2 विज्ञान आदि। विषयों में किया जाता है। इस विधि में योग्यता लाने के लिए कुछ खास बातों को ध्यान में रखना पड़ता है। वर्णन की भाषा सरल हो। वर्णन की गति बहुत तेज या ~~सरल~~ बहुत धीमी हो जाए। वर्णन छात्रों के आयु के अनु-कूल हो।

2) विवरण पद्धति ⟶ विवरण देते समय अध्यापक किसी घटना या तथ्य की कल्पना द्वारा ~~सरल~~ रोचक तथा मनोरंजक बनाने का भी प्रयास करता है। विवरण का प्रयोग इतिहास, भूगोल तथा भाषा आदि पाठों में किया जाता है। विवरण के द्वारा इन विषयों में रोचकता आ जाती है। विवरण को रोचक बनाने के लिए ब्लैक बोर्ड का भी प्रयोग करना चाहिये। जिन बातों का विवरण दिया जाता है। वह बालक के बौद्धिक स्तर के अनुसार होना चाहिए। विवरण करते समय अध्यापक के हाव-भाव में स्वाभाविकता होनी चाहिए। विवरण न तो बहुत लम्बा और न अत्यधिक छोटा होना चाहिए।

3) तुलना (comparission) ⟶ जब हम दो विषयों या तथ्यों के पक्ष और विपक्ष की तुलना करते है। तब वह

तुलना कहलाती है। नवीन ज्ञान का शोध करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि अनेक उदाहरणों के प्रयोगों व सिद्धान्तों की समानता व असमानता की तुलना की जाए। नागरिक शास्त्र, भाषा एवं इतिहास आदि विषयों में तुलनात्मक अध्यापन का अपना अलग महत्व है। गणित, भूगोल तथा व्याकरण में भी तुलना का प्रयोग विषय को रोचक बनाने में विशेष सहायक होता है।

4) व्याख्या पद्धति (Explanation) → व्याख्या का प्रयोग किसी विषय को सरल बनाने के लिए किया जाता है। आज के शिक्षण में इस युक्ति का प्रयोग विशेष लाभदायक है। व्याख्या करते समय कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना चाहिये जैसे- कठिन स्थानों के लिए व्याख्या का प्रयोग उचित होता है साथ ही व्याख्या न तो बहुत लम्बा होना चाहिए न ही बहुत छोटा किन्तु इतना बड़ा होना चाहिए की विषय स्पष्ट हो जाए। साथ ही बालक के बौद्धिक स्तर के अनुकूल हो।

5) कहानि कहना पद्धति (Story telling) → कहानी कहना भी एक कला है अतः अध्यापक को कहानी कहने की कला में निपुण होना चाहिए। प्राचीन काल से ही किसी विषय को रोचक बनाने में कथा प्रणाली का उपयोग विशेष उपयोगी सिद्ध हुआ है। भाषा भूगोल आदि विषयों में कहानी प्रणाली का प्रयोग सफलता के साथ-साथ किया जा सकता है। कहानी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक वैज्ञानिक का कथन है कि शैक्षिक दृष्टी से कहानी का प्रयोग अनेक बाते सीखने के लिए किया जा सकता है। पढ़ना-लिखना, सीखना, भाषा का ज्ञान प्राप्त करना इतिहास जीवन विज्ञान आदि. अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ कहानी का प्रयोग किया जा सकता है। पंडित सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार कहानी से ज्ञान की परिधि का विकास होते

37

ना हो एक भी लक्ष्य भले ही न बताए परन्तु मनुष्य को उसके लक्ष्य के बारे में ज्ञान हो गया हो तो समझो कहानी पढ़ना सार्थक हो गया।

6) प्रश्न और उत्तर पद्धति (Questioning and Answering) →
यह प्रणाली बालकों के प्रशिक्षण में शिक्षण का एक महत्वपूर्ण साधन है। प्रश्नों के द्वारा ही अध्यापक छात्रों के सम्पर्क में आते हैं। राय माउन्ट के अनुसार प्रश्न करने की उत्तम शैली का विकास करना यही प्रत्येक शिक्षक की सबसे बड़ी आकला है। क्या, क्यों, कब, कैसे, कौन तथा कहाँ इसके सहयोगियों का प्रयोग करना लाभदायक सिद्ध होता है। प्रश्नों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए राय बर्न लिखते हैं — शिक्षण में प्रश्न का सर्वाधिक महत्व होता है कथन कोई अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है कि शिक्षक की सफलता उसकी भली भांति प्रश्न पूछने की योग्यता पर निर्भर करती है। प्रश्न बालकों को उत्तेजित करते हैं और यदि उसका उपयोग निपुणता पूर्वक किया जाए तो उसकी शिक्षा प्राप्ति को भी निर्देशित कर सकते हैं।

7) सहानुभूतिपूर्ण पद्धती → यहाँ पर निर्देश से तात्पर्य शैक्षिक आदेश या अध्यापक से है। हेरबेर ने शिक्षा में अध्यापक को आवश्यक माना है। अध्ययन से तात्पर्य बालक के मस्तिष्क को विभिन्न प्रकार की सामग्री से भरना नहीं है बल्कि उसका परिष्कार करना है। इसमें शिक्षक के सहानुभूतिपूर्ण निर्देशन की आवश्यकता है।

8) क्रियात्मक पद्धती → बालक किसी भी कार्य को करके अधिक अच्छे ढंग से सीख सकता है। विद्यालय में भाषण के बाद विद्यार्थी द्वारा प्रश्न पूछने और वाद-विवाद किन्तु

उससे भी महत्वपूर्ण क्रिया रचनात्मक क्रिया है जो कि स्वा-
-भाविक निरंतर व प्रगतिशील होनी चाहिए। यह आत्माभि-
-व्यक्ति की ओर ले जाती है। उससे बालक की सर्वोच्च
शक्तियों का विकास होता है। मानसिक क्रिया के द्वारा
बालक प्रसन्नता और प्रेमपूर्वक सीखता है। जिससे उसके
व्यक्तित्व का विकास होता है और इसे बहुत सी नई-2
वस्तुओं से परिचय प्राप्त होता है।

9) पुस्तक पठन पद्धति ⟶ यह प्रणाली भी मनोवैज्ञानिक
है। इसमें शिक्षक पाठ्य पुस्तकों की मदद से शिक्षण
क्या है इसकी जानकारी प्राप्त करते हैं। इसका प्रयोग भी
दो ढंग से किया जाता है। अध्यापक स्वयं पुस्तक पढ़कर
छात्रों को सुनाते थे या छात्र ही क्रम से पुस्तक के अंश
को पढ़ देते हैं। बीच-2 में अध्यापक भी प्रश्न करते थे।
और कठिन शब्दों या अवश्यक अर्थ बता देते हैं। आजकल
अधिकांश शिक्षक इस प्रणाली को अपनाते हैं क्योंकि इसमें
परीक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।

10) तर्क पद्धति ⟶ इस प्रणाली में प्रशिक्षण लेने की
विषय वस्तु को तर्क के द्वारा अधिक सुलझाया हुआ
तथा विद्यार्थियों के लिए आसान बनाया जा सकता है। जिसके
एक ही विषय पर विभिन्न प्रकार से तर्क-वितर्क कर पाते हैं
पाठ को आसान बना सकते हैं। तर्क करने से विद्यार्थियों
का मस्तिष्क भी विकसित होता है। वे अपने दिमाग से
अधिक सोच विचार करता है। फलस्वरूप मस्तिष्क अधिक
विकसित होता है।

11) प्रयोजन प्रणाली ⟶ स्कूलों में जिन विषयों की
शिक्षा दी जाती है तथा जिस प्रकार स्वभाविक निर्माण

किया जाता है। यह पाठ्य विश्व में वादिरत सामाजिक जीवन से मेल नहीं खाता। प्रयोजन पद्धति उस पुस्तकीय तथा अकर्मण्य पद्धति के एक खुला विद्रोह है। क्योंकि इस पद्धति द्वारा बच्चों को सावधानी पूर्वक प्रशिक्षण दिया जाता है। इन्हें संसार की यथार्थताओं का ज्ञान कराया जाता है। अनेक शिक्षा शास्त्री स्पष्ट तथा निश्चित शब्दों में पुरानी पद्धति का विरोध करते हैं क्योंकि इसमें विषयों का कृत्रिम विभाजन होता है। उनको कहना है कि इस पुरानी पद्धति को छोड़ो बच्चों के समुख वास्तविक जीवन संबंधि कोई आयोजन करो ताकि बच्चे उस पर कार्य करे तथा इसके परिणामों का परिक्षण करें।

उपरोक्त शिक्षण प्रणाली में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के अनुभव पर जोर दिया गया है। दोनों को सक्रिय होना चाहिए और दोनों को अपने अनुभव के आदान-प्रदान से आगे बढ़ना चाहिए।

अतः शिक्षण प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक की आन्तरिक शक्तिओं का पूर्ण विकास हो सके।

Thank you

SK

16/5/2020